IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारत में औद्योगिक विकास का महत्व एवं समस्याएं

**डॉ0 चन्द्रप्रभा**

**असि0 प्रो0, भूगोल विभाग**

**वी0 एस0 एस0 डी0 कॉलेज कानपुर**

औद्योगीकरण को व्यापक रुप में आर्थिक विकास एवं उच्च जीवन स्तर की कुंजी माना जाता है। औद्योगिक विकास रोजगार में वृद्धि, श्रमिकों की उत्पादकता में वृद्धि, पॅजी निर्माण की दर में वृद्धि, अवसंरचनात्मक सुविधाओं में वृद्धि एवं बचत में वृद्धि में सहायक होता है।औद्योगिक विकास जनसमूह की कृषि पर निर्भरता को कम करने में सहायक होता है जिसके परिणामस्वरुप लोगों में छिपी बेरोजगारी से छुटकारा मिलता है।पं0 जवाहर लाल नेहरु जी ने औद्योगीकरण के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था ''सभी देश जिस जिस देवता की पूजा करते हैंवह देवता है औद्योगीकरण, वह देवता है मशीन, वह देवता है अत्यधिक उत्पादकता तथा प्राकृतिक संसाधनों का अधिक से अधिक लाभ के लिए उपभोग करना।'' भारत में औद्योगिक विकास का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि औद्योगिक विकास से कृषि को उत्पादन के उन्नत साधन जैसे अनेक कृषि उपयोगी मशीन, ट्रैक्टर, ट्यूबवेल, रासायनिक खाद, रासायनिक कीटनाशक, आदि प्राप्त होते हैं, जिसकी सहायता से कृषि उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। भारतीय कृषि देश के आर्थिक विकास का आधार है। एम पीटोडारो के अनुसार यदि आर्थिक विकास की प्रक्रिया शुरु होनी है एवं उसे आत्मनिर्भर बनाना है तो उसे सामान्य रुप से ग्रामीण क्षेत्र में तथा विशेषकर कृषि क्षेत्र से आरम्भ करना होगा। भारत के उद्योग कच्चे माल की प्राप्ति तथा तैयार माल की बिक्री के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। भारतीय औद्योगिक योजनाओं की सफलता काफी हद तक कृषि के विकास एवं प्रगति पर निर्भर करती है। गुन्नार मिर्डाल के अनुसार ''भारत की दीर्घकालीन आर्थिक विकास की लड़ाई कृषि क्षेत्र में जीती या हारी जायेगी।

**मुख्य बिन्दु :–** औद्योगिक विकास, अवसंरचनात्मक सुविधा, छिपी बेरोजगारी, आर्थिक विकास,कृषि उत्पादकता

**अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति :–**

भारत की अवस्थिति भूमण्डल के उत्तरी एवं पूर्वी गोलार्धों में 8̊ 4′ उत्तरी अक्षांश से 37̊ 6′ उत्तरी अक्षाशों के मध्य तथा 68̊ 7′ पूर्वी अक्षांश से 97̊ 25′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य पायी जाती है। इसकी स्थिति लगभग पूर्वी गोलार्धो के मध्य पाई जाती है। लगभग 30̊ के देशान्तरीय विस्तार के कारण देश को दो समयमेखलाओं में बाटा जा सकता है। 82̊ 30′ पूर्वी देशान्तर को भारतीय मानक समय के निर्धारण हेतु मानक याम्योतर के रुप में माना गया है। भारतीय मानक समय , ग्रीनविच औसत समय से 5 घण्टा 30 मिनट आगे है। कर्क रेखा देश के बीचोबीच गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगााल, त्रिपुरा एवं मिजोरम राज्यों से होकर गुजरती है। भारत की प्रकृतिक अवस्थिति हिन्द महासागर के उत्तरी भाग में है। भारत की उत्तरी सीमाएं हिमालय पर्वत श्रेणियों द्वारा निर्धारित होती है। हिन्द महासागर के उपान्त सागरों द्वारा इसकी दक्षिणी सीमाओं का निर्माण होता है।

**शोध पत्र का उद्देश्य :–**

1. औद्योगिक विकास के महत्व की समीक्षा करना ।
2. भारत में औद्योगिक विकास की समस्याओं का अध्ययन करना।
3. औद्योगिक विकास के परिवर्तित स्वरुप का अध्ययन करना

**शोध पत्र की शोधविधि :–**

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आंकड़ें, शोधपत्र से सम्बन्धित ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं, शासकीय प्रतिवेदनों, प्रकाशित ऑकड़ों की सहायता से प्राप्त किये गये हैं। इन आकड़ों का सारणीयन किया गया है। इनकी सहावता से बार डाईग्राम, पाई चार्ट, लाइन ग्राफ आदि चित्रों का निर्माण किया गया है।

**परिकल्पना :–**

औद्योगिक आर्थिक विकास की धुरी है।

औद्योगिक विकास देश के निर्यात को बढ़ावा देता है।

औद्याकगिक विकास जनसंख्या के जीवन स्तर में वृद्धि करता है।

आधुनिक युग उद्योग एवं व्यापार का युग है। विश्व के लगभग समस्त विकसित देश उद्योग एवं उन्नत व्यापार पर आधारित है। विश्व के बड़े या छोटे, अमीर या गरीब, विकसित या विकासशील सभी देशअपने संसाधनों द्वारा तेजी से औद्योगिक विकास करने लगे है। आधुनिक औद्योगिक काल के पूर्व भारत में कुटीर और घरेलू उद्योग विकसित अवस्था में थे। भारत में औद्योगिक विकास का प्रथम साक्ष्य सिन्धु घाटी सभ्यता से मिलता है। साक्ष्यों के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता काल में कपड़ा बुनने का विकास हो चुका था। सूती कपड़े का निर्यात मेसोपोटामिया में होता था। इस काल में स्वर्णाभूषण, मिट्टी के बर्तन, धातु की चादरें, औजार, हथियरा, नाव, खिलौना आदि बनाने के लिए उद्योग का विकास हो चुका था। प्राचीन काल में जिस समय भारत में शिल्पकला अपनी दक्षता के चरम बिन्दु पर थी । प्राचीन अभिलेखों के अनुसार भारत में दो प्रकार के उद्योगों की परम्परा विकसित थी एक ग्रामीण उद्योग दूसरा शहरी उद्योग। ग्रामीण उद्योगों का विकास ग्रामीण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हुआ था। इसका विकास सम्पूर्ण देश के ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ था। ऐसे उद्योगो में मुख्यतः वस्त्र, कृषि, चमड़ा, धातु, लकड़ी के सामान, मिट्टी के पात्र, उपकरण सामग्री प्रमुख थें। ये उद्योग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में पाये जाते है। नगरीय/ शहरी उद्योग नगरों के राजधानी में व्यवसायिक स्थल के रुप में विकसित हुए थे। इनमें औद्योगिक उत्पादन होते थे थे। यहां पर काय करने वाले, कुशल कारीगर पाये जाते थे। रत्न और आभूषण, वस्त्र, धातु एवं कांच की सामग्री अपनी गुणवत्ता के कारण विश्व प्रसिद्ध थे। भारत में कुटीर उद्योग एवं घरेलू उद्योग विकसित अवस्था में थे। भारतीय सामानों, मलमल के कपड़ें, सूती एवं रेशमी कपड़े, कलात्मक वस्तुएं आदि की मांग विदेशों में थी। ब्रिटिश सरकार की भारत से कच्चा माल के निर्यात और देश में ब्रिटिश उत्पादों केआयात को प्रोत्साहित करने की नीति ने पारम्परिक औद्योगिक ढ़ाचे की कमर तोड़ दी। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में सन 1853 तक आधूनिक तरीके के उद्योगों की स्थापना नही हो पाई थी।

भारत में औद्योगिक विकास 153 वर्ष पुराना है। स्वतंत्रता पश्चात इसमें गतिशीलता आई। इसके अन्तर्गत प्रथम सफल प्रयास वर्ष 1854 में सूती वस्त्र बनाने का कारखना, वर्ष 1855 में रिसरा, कोलकाता के निकट, जूट का कारखाना, वर्ष 1867 में बाली , कोलकाता में कागज का कारखाना, वर्ष 1869 में, कानपुर में चमड़ा उद्योग, वर्ष 1872 में कच्चा लोहा बनाने का कारखाना कुल्टी में स्थापित करने से हुआ। औद्योगिक विकास को नई दिशा एवं गति वर्ष 1908 में जमशेदपुर में टाटा लौह इस्पात कम्पनी की स्थापना से हुआ। अंग्रेज ब्रिटेन के उद्योंगों के लिए भारत के बाजार को किसी भी कीमत पर खोना नही चाहते थे इसलिए केवल उन्हीं उद्योगों को भारत में प्रोत्साहन दिया जिनका विकास ब्रिटेन के लिए अनुकूल नही था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बहुत सी उपभेक्ता वस्तुओं की कमी होने लगी अतः फिर से चीनी, इस्पात, कांच, सीमेंन्ट, औद्योगिक रसायन एवं इंजीनियरिंग सामान बनाने वाले उद्योगों की स्थापना हुई। वर्ष 1916 में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय औद्योगिक आयोग की स्थापना की। जिसके सुझावों के अनुसार उद्योगों की स्थापना होने लगी। वर्ष 1920 में डॉ0 एम विश्वैश्वरैया ने भारत के नियोजित विकास के लिए एक दस वर्षीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

**सारणी :– 1**

**भारत में स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक उद्योगों का विकास**

| उद्योग | 1917 | 1929 | 1939 | 1947 |
|---|---|---|---|---|
| कुल कारखानें | 4827 | 8012 | 8973 | 11961 |
| कार्यरत श्रमिक, हजार में | 1293.1 | 1799.3 | 2086.9 | 2690.6 |
| छोटे कारखाने | 538 | 1354 | 1579 | 2990 |
| कार्यरत श्रमिक, हजार में | 12.9 | 34.2 | 50.8 | 53.4 |

स्रोत :– शिकोरोव ग0 फ0, भारत का औद्योगीकरण , प्रगति प्रकाशन, मास्को 1976।

**भारत में स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक उद्योगों का विकास**

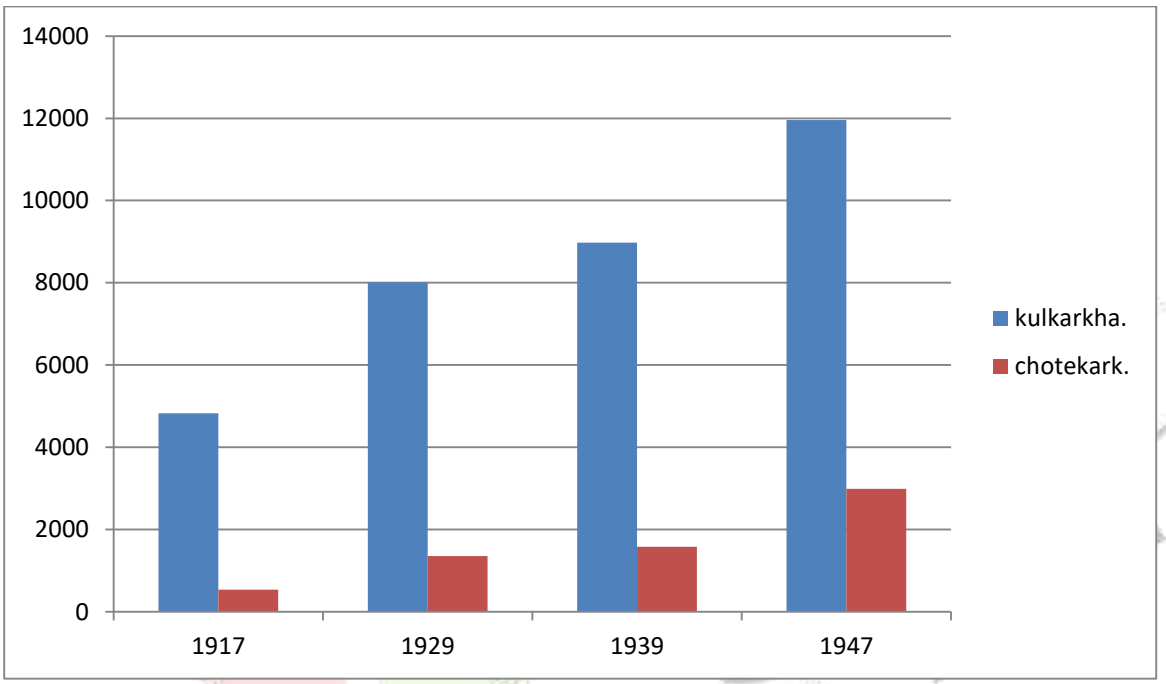


स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात औद्योगिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए नई नीति बनाई गयी। प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरु ने औद्योगीकरण का पूर्ण समर्थन किया। इनके अनुसार ''यदि हम औद्योगिक संसार की अवश्यकताओं को नही समझेगें तो हम नष्ट हो जायेगें।'' औद्योगिक विकास हेतु नई नीति तैयार करना, प्राथमिकता का निर्धारण करना, और निजी उद्यमियों के मन से राष्ट्रीयकरण का भ्रम दूर करने के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने 6 अप्रैल 1948 को औद्योगिक नीति संकल्प की घोषणा की जिसके अन्तर्गत औद्योगिक विकास में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों को सम्मिलित करने का फैसला लिया गया। इसके अन्तर्गत उद्योगों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया।

**1– पूर्ण राज्य अधिकार :–** इसमें पूर्ण जिम्मेदारी सरकार की थी। इसमें अस्त्र–शस्त्र, सैन्य सामग्री बनाने वाले उद्योगों, परमाणु उर्जा का उत्पादन एवं नियंत्रण, रेल परिवहन स्वामित्व एवं प्रबंन्धन उद्योग आदि सम्मिलित थे।

**2–राज्य रीजिलेशन :–** इसमें नियोजन एवं नियमन की जिम्मेदारी केवल केन्द्र सरकार को दी गई। इसके अन्तर्गत मशीन निर्माण, रसायन, उर्वरक, रबड़, सीमेण्ट, अलौह धातु,कागज, अखबारी कागज, मोटरगाड़ी, बिजली इंजीनियरिंग आदि मूलभूत उद्योग सम्मिलित किये गये।

**3– नई इकाइयों हेतु राज्य अधिकार :–** इसमें केवल राज्य सरकार द्वारा उद्योग लगाये जा सकते हैं। इसके अन्तर्गत कोयला, लौह एवं इस्पात, हवाई जहाज निर्माण, जहाज निर्माण, टेलीफोन, टेलीग्राम, बेतार उपकरण और खनिज तेल सम्मिलित थे।

**4– गैर विनियमित निजी संस्थान :–** इस क्षेत्र के उद्योगों को निजी, व्यक्तिगत एवं सरकारी क्षेत्रों के विकास के लिए छोड़ दिया गया।

**सारणी :–2 औद्योगिक विकास के चुनिन्दा सूचक 2002–03 एवं 2020–21 प्रतिशत में**

| क्रंसं. | प्रदेश | कार. की | संख्या | कुल | श्रमिक | कार्यरत | पूंजी | कुल | उत्पादन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 2002–3 | 2020–21 | 2002–3 | 2020–21 | 2002–3 | 2020–21 | 2002–3 | 2020–21 |
| 1 | महाराष्ट्र | 13.73 | 10.4 | 13.46 | 9.84 | 13.39 | 21.48 | 19.25 | 18.01 |
| 2 | गुजरात | 10.30 | 11.6 | 8.57 | 8.76 | 17.56 | 18.20 | 16.16 | 18.00 |
| 3 | तमिलना | 15.28 | 15.8 | 14.93 | 13.86 | 8.47 | 9.34 | 9.56 | 10.11 |
| 4 | आन्ध्रप्र | 11.44 | 6.8 | 14.03 | 10.39 | 7.42 | 8.31 | 7.28 | 8.66 |
| 5 | उ.प्र. | 7.02 | 6.5 | 6.64 | 5.45 | 9.03 | 8.76 | 7.12 | 7.34 |
| 6 | कर्नाटक | 5.44 | 6.3 | 6.01 | 6.75 | 4.47 | 6.21 | 5.80 | 6.82 |
| | | | | | | | | | |

**स्रोतः**–स्टैस्टिकल ऐबस्टैक्ट इंडिया,2002–3

**सारणी :–3 भारत में कुल आयात–निर्यात, व्यापार संतुलन वर्ष 1949– 2022**

| वर्ष | निर्यात, करोड़ | आयात, करोड़ | व्यापार संतुलन | परि.दर, निर्यात | आयात, प्रतिश. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1949–50 | 485 | 617 | –132 | – | – |
| 1959–60 | 640 | 961 | –321 | 10.2 | 6.1 |
| 1969–70 | 1413 | 1582 | –169 | 4.1 | 17.1 |
| 1979–80 | 6418 | 9143 | –2725 | 12.1 | 34.2 |
| 1989–90 | 27658 | 35328 | –7670 | 36.7 | 25.1 |
| 1999–00 | 159095 | 215529 | –56434 | 13.8 | 20.9 |
| 2009–10 | 845534 | 1363736 | –518202 | 0.6 | –0.8 |
| 2019–20 | 2219854 | 3360954 | –1141100 | –3.8 | –6.5 |
| 2021–22 | 2266225 | 3281173 | –1014948 | – | – |

स्रोत :– वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकीय महानिदेशालय, कोलकाता

**भारत में कुल आयात निर्यात , व्यापार संतुलन, वर्ष 1949– 2022**

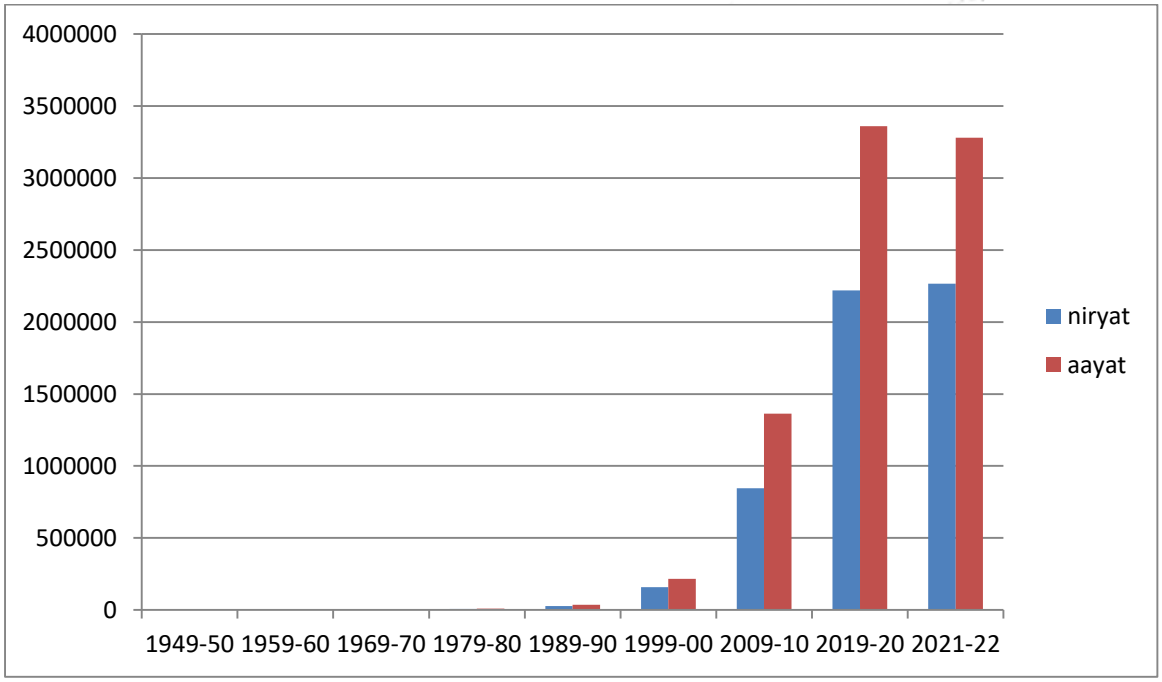

तालिका के अनुसार भारत में वर्ष 1949–50 में निर्यात 485 करोड़, एवं आयात 617 करोड़ रुपये में था तात्कालीन समय में व्यापार संतुलन –132 करोड़ रुपये था। वर्ष 2021–22 में निर्यात एवं आयात दोनों में बहुत अत्यधिक वृद्धि हुई है लेकिन व्यापार संतुलन भी उसी के अनुपात में बढ़ता गया है। भारत में आयात का मूल्य सदैव ही निर्यात से अधिक रहा है।परिणामस्वरुप व्यापार सदैव ही असंतुलित रहा है।

**सारणी :– 3 भारत में विदेशी व्यापार के सूचकांक , रुपये में**

| वर्ष | इकाई, निर्यात | सूचकांक, आयात | परिमाण, निर्यात | सूचकांक, आयात | व्यापार, कुल | स्थिति, निवल | आय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2013–14 | 112 | 108 | 139 | 94 | 68 | 103 | 144 |
| 2017–18 | 110 | 92 | 200 | 123 | 62 | 120 | 240 |
| 2021–22 | 144 | 134 | 189 | 131 | 69 | 108 | 204 |

स्रोत :– डी0 जी0 सी0 आई0 एण्ड एस0 कोलकाता

औद्योगिक विकास का महत्व

भारतीय विकासशील अर्थव्यवस्था की आर्थिक प्रगति में औद्योगिक विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। औद्योगिक विकास के द्वारा देश की बेरोजगारी, पिछड़ापन, निर्धनता, कृषि पर निर्भरता, असुरक्षा,आदि की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को परिवर्तित करने में औद्योगिक विकास महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में औद्योगिक विकास का महत्व निम्न है।–

उत्पादकता में वृद्धि :– कृषि आधारित उद्योगों के कारण कृषि उत्पादकता में तीव्र वृद्धि होती है। कृषि आधारित उद्योग के कारण कृषित कच्चा माल की मांग में तीव्रता से वृद्धि होती है जिससे उसकी उत्पादकता भी बढ़ती है। औद्योगीकरण के फलस्वरुप श्रम विभाजन, विशिष्टीकरण, मशीनों का उत्पादन में भी तीव्रता से वृद्धि होती है।

संतुलित विकास :– देश की 50 प्रतिशत से अधिक की जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। जिससे जनसंख्या का कृषि पर दबाव बढ़ता है। उद्योगों के विकास के फलस्वरुप जनसमूह का ध्यान आय अर्जन हंतु उद्योगों की ओर आकर्षित होता है। रोजगार एवं आय अर्जन के लिए लोगों का पलायन उद्योगों की तरफ होनें से कृषि पर दबाव कम होता है।

राष्ट्रीय आय में वृद्धि :–औद्योगिक विकास के फलस्वरुप प्राकृतिक संसाधनों का उत्पादन एवं उपभोग सम्भव हो पाता है। उत्पादन में वृद्धि होनें से, मांग में वृद्धि होने से मूल्य में वृद्धि होती है। कच्चे मांल की प्रोसेसिंग एवं गुणवत्ता में वृद्धि होने से वस्तु की मूल्य में वृद्धि होती है।अधिक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन होने से निर्यात में भी वृद्धि होती है। जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

रोजगार में वृद्धि :– नए नए उद्योगो के विकास होने श्रम की मांग बढ़ती है। अधिक लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते है। हर समूह के श्रमिकों को उद्योग में कार्य करने एवं आय अर्जन के अवसर प्राप्त होते है। अकुशल, अर्द्धकुशल, कुशल एवं तकनीकि रुप में दक्ष लोगों हेतु समान अवसर उपलब्ध होता है।

जीवन स्तर में सुधार :– लोगो के जीवन स्तर में वृद्धि करने में औद्योगिक विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। रोजगार से अधिक आय अर्जन से लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से सम्भव हो जाती हैं। लोगों का आर्कषण औद्योगिक उत्पादन की ओर होता है वे उसे खरीदते हैं और उसका उपभेग करते हैं। भैतिक सुख सुविधओं की लालसा एवं उन्हें खरीदने की क्षमता से वे घरेलू उपकरण, टीवी , फ्रिज, टेलीफोन, स्कूटर, कार अच्छे कपड़े आदि का उपभोग करने की इच्छा को पूर्ण करते है। इन सभी भैातिक सुख सुविधाओं के उपभोग से उनके जीवन स्तर एवं रहन सहन में सुधार होता है।

पूँजी निर्माण में वृद्धि :– आर्थिक विकास हेतु पूँजी निर्माण अधिक महत्वपूर्ण है। पूँजी निर्माण बचत तथा निवेश पर निर्भर करता हैं। आय में वृद्धि एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात शेष आय की बचत प्रवृत्ति बढ़ती है। बचत करने की क्षमता एवं प्रवृत्ति बचत को बढ़ाती है। लोग बचत को निवेश करते हैं जिससे पूँजी निर्माण की दर बढ़ती हैं।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा में यागदान :– आधुनिक युग में देश की प्रतिरक्षा हेतु विविध प्रकार के उन्नत हथियारों, टैकों, हेलीकॉप्टरों, ,हवाई जहाजों ,युद्धकविमान, जलपोतों, आदि की आवश्यकता होती है। ये सभी सामग्री उद्योगों के विनिर्माण द्वारा प्राप्त होती है। युद्ध सामग्री के लिए विदेशों पर निर्भर रहना देश की सुरक्षा के लिए ठीक नही है अतएव युद्ध सामग्री का उत्पादन करने वाले उद्योगों की स्थापना देश में हो जिससे राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सुद्ण हो सके।

निर्यात प्रोत्साहन :– औद्योगिक विकास से विविध प्रकार के सामग्री के उत्पादन में वृद्धि होती है। जिनसे गुणवत्तापूर्ण सामग्री, इंजीनियरींग सामान, केमिकल, आभूषण, वस्त्र, आदि सामान के निर्यात में वृद्धि होती है।

प्राकृतिक साधनों का अनुकूलतम उपयोग :– देश के प्राकृतिक संसाधनों पेट्रोल, खनिज, गैस, जल आदि का उपयुक्ततम उपभोग औद्योगिक विकास द्वारा ही सम्भव होता है। अपने ही देश परिसंस्करण, शोधन, परिशोधन से उसके मूल्य मे वृद्धि होती है और निर्यात से अधिक मूल्य की प्राप्ति होती है। देश में भी सर्वसुलभ होता है। इन सभी प्राकृतिक संसाधनों के परिसंस्करण हेतु मशीनों ,यंत्रों का निर्माण औद्योगीकरण के फलस्वरुप अपने देश में ही होता है।

अद्योःसंरचना का विकास :– किसी भी उद्योगों के निर्माण हेतु उर्जा संसाधनों की उपलब्धता, बाजार, परिवहन एवं संचार, की सुविधाओं की आवश्यकता होती है।औद्योगिक विकास हेतु अद्योःसंरचना अति आवश्यक होती है। जिससे कच्चेमाल को उद्योगों तक एवं उत्पादित माल ,उत्पादन को बाजार, उपभोक्ता तक पहुंचाने की सुविधा प्राप्त हो सके।

औद्योगिक विकास की समस्याएंः– औद्योगिक विकास की दिशा मे कई सफलताओं के बावजूद भारत में औद्योगिक विकास दर कई देशों की तुलना में काफी कम हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के 64 वर्षों , 1947– 2011, में औद्योगिक विकास की दर मात्र 5 प्रतिशत ही रही जबकि चीन में यह दर 13 प्रतिशत रही है। भारत में औद्योगिक विकास की समस्याएं निम्न है।–

शक्ति के साधनों की कमी :– औद्योगिक विकास हेतु शक्ति के साधनों का उचित कीमतों पर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना अति आवश्यक है। शक्ति के तीन प्रमुख साधन, कोयला, बिजली और तेल है। देश में ताप और जल बिजली दोनों की उपलब्धता वर्तमान समय में बहुत कम है। भारत में बिजली की उपलब्धता, उद्योगों से ज्वादा कृषि को प्राथमिकता दी जाती है। जिससे उद्योगों को बिजली आपूर्ति कम होती है और निर्माण कार्य हेतु डीजल इंजनों का प्रयोग करना पडता है। जिससे उत्पादन लागत बढ़ती है।

पूंजी की अपर्याप्तता :– उद्योगों के विकास के लिए पूंजी एक महत्वपूर्ण तत्व है। किसी देश में पूंजी की बचत मात्रा उसके निवेश पर निर्भर करती है। भारत मे आवश्यक पूजी की नितान्त आवश्यकता है। देश में गरीबी के कारण क्रय विक्रय शक्ति कम होने से उत्पादन की खपत प्रभावित होती है।जिससे उद्योगो को अपेक्षित गति प्राप्त नही हुई। पूंजी की आवश्यकता से कम पूर्ति भारत में औद्योगिक विकास के मार्ग में बाधा है।

असंतुलित औद्योगिक संरचना :– स्वतंत्रतापश्चात औद्योगिक विकास हेतु हुए सभी प्रकार के प्रयास के पश्चात भी भारत में औद्योगिक सांचना अभी भी संतुलित नही हैं। बहुत सी ऐसी तकनीकि एवं उपकरण है जिसकेलिए भारत को विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत में उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण 38 प्रतिशत, मशीन और परिवहन उपकरण 19 प्रतिशत, रसायन उद्योगों का योगदान 11 प्रतिशत एवं अन्य उद्योगों का योगदान 32 प्रतिशत काफी कम है।

आर्थिक संरचना की अपर्याप्तता :– औद्योगकि विकास हेतु विकसित आर्थिक संरचना जैसे यातायात संचार, के साधन, उर्जा बाजार, परिवहन आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इन सभी की स्थिति सन्तोषप्रद नही है। उर्जा की नितान्त कमी है। रेल एवं सड़क परिवहन अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। दूरसंचार जैसी सुविधा भी अपर्याप्त है।

औद्योगीकरण में क्षेत्रीय असमानता :– भारत के सभी राज्यों में औद्योगीकरण समान नही है। महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश औद्योगिक दृष्टि से काफी विकसित हैं देश के 60 प्रतिशत उद्योग इन्ही

राज्यों में स्थापित है और देश के 70 प्रतिशत उत्पादन इन्ही ं राज्यों से होता है। जबकि अन्य राज्यों मे उद्योगों का विकास साधारण है। अन्य क्षेत्रों मे उद्योगें में धन का निवेश करने के पश्चात भी कुछ बड़े उद्योगों को छोड़कर अन्य उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन नही मिल सका। 13 पंचवर्षीय योजनाओं में प्रयास के बावजूद औद्योगिक विकास की असमानता को कम नही किया जा सका।

औद्योगिक कच्चे माल की कमी :– भारतीय कृषि कच्चे माल का मुख्य स्रोत है जो आज भी मानसून पर आश्रित है। प्रकृतिक आपदाओं से कृषि उत्पादकता में कमी आती है जिससे उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति भी प्रभावित होती है। इससे लोगों की क्रय शक्ति पर भी प्रभाव पड़ता है। औद्योगिक उत्पादों की मांग घट जाती है। रासायनिक उद्योगों, इंजीनियरिंग उद्योगों, कार, कम्प्यूटर आदि उद्योगों हेतु कच्चे माल के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है।

इन सभी समस्याओं के साथ कई और समस्याएं है जो औद्योगिक विकास के मार्ग में बाघा का कार्य करती हैं। जैसे उपयुक्त प्लांट एवं मशीनरी की समस्या, अधिक उत्पादन लागत एवं निम्न गुणवत्ता, औद्योगिक रुग्णता, एकाधीकारी शक्तियों में वृद्धि, सरकारी नीतियां आदि।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :–**


1. चौहान,पी0 आर0, प्रसाद महातम,भारत का वृहद भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर,2005, पेज सं0 398
2. तिवारी आर0 सी0, भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2007, पेज सं0 298
3. बंसल, पी0 सी0, एग्रीकल्चरल प्रॉव्लम ऑफ इंडिया, विकास पब्लिशिंग हाउस,न्यू डेल्ही, 1997,पेज सं0 484
4. शफी एम0, ज्योग्राफी ऑफ ट्रान्सर्पोट एण्ड मार्केटिंग, इन अ सर्वे आफॅ रिसर्च इन ज्योग्राफी, बाम्बे, 1972
5. यादव, हीरालाल, जनसंख्या भूगोल के मूल तत्व, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज सं0 254
6. एनवल सर्वे आफ इनडस्ट्रीज 2021
7. स्टैस्टिकल ऐबस्ट्रैक्ट आफ इंडिया 2004, 2021
8. वाणिज्यिक अधिसूचना और सांख्यिकीय महानिदेशालय कोलकाता